कोई मेल ट्रेन नहीं रूकती हालांकि बहुत सारी गाड़िया गुजरती है और चुनार के वासिन्दे उन्हें हसरत की निगाह से देखते हैं कि अगर यह मेल ट्रेन चुनार खड़ी होती तो हम भी इससे दिल्ली के लिए सफर करते। मान्यर, यहां से महानन्दा, कालका मेल, एन०ई० मेल/एक्सप्रेस गाड़ियां चलती है, लेकिन वे खड़ी नहीं होती है। अगर इनमें से एक भी गाड़ी चुनार स्टेशन पर खड़ी हो जाए तो चुनार के लोगों को दिल्ली आने के लिए बड़ी सहूलियत मिल जाय।

अतः मैं रेलवे मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगा कि कालका मेल, महानन्दा एक्सप्रेस और एन०ई० एक्सप्रेस इन्हीं में से एक गाड़ी चुनार स्टेशन पर रुके ताकि दिल्ली आने में सुविधा हो। धन्यवाद।

Need to provide more facilities at Gaya Airport

श्री नरेश यादव (बिहार): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान बिहार राज्य के गया हवाई अड्डा को अंतर्राष्ट्रीय हवाई मार्ग से जोड़ने की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं। गया हवाई अड्डा बिहार राज्य का सबसे बड़ा हवाई अड्डा है। इसे सही एवं दुरुस्त कर बड़े से बड़े जहाजों को उतारने लायक बनाया जा सकता है। ज्ञातव्य हो कि इस हवाई अड्डे को कलकत्ता के हवाई अड्डे का वैकल्पिक हवाई अड्डा मानकर तैयार कराया गया था ताकि अगर कलकत्ता में हवाई जहाज को उतरने में किसी प्रकार की कठिनाई हो तो गया में उतारा जा सके।

गया एवं बोधगया का अंतर्राष्ट्रीय जगत में क्या महत्व है, यह सर्वविदित है। बोधगया से अधिक विदेशी पर्यटकों की यात्रा अन्यत्र कहीं भी एक स्थान पर नहीं होती और यह भी तब, जब कि यहां रेल और हवाई मार्ग की सुविधा पर्याप्त नहीं है। यदि गया को हवाई मार्ग से जोड़ दिया गया तो यहां पर्यटकों की संख्या कई गुना अधिक हो जाएगी और सरकार को अधिक से अधिक राजस्व तथा विदेशी मुद्रा प्राप्त होगी। यहां यह भी बताना तर्कसंगत होगा कि कुछ समय पहले कोरिया का एक शिष्टमंडल भारत में आया था, जिसने पटना और गया की भी यात्राएं की थीं। उनकी यात्रा का मुख्य उद्देश्य कोरिया से चार्टर्ड प्लेन गया लाए जाने की संभावना तलाशना था।

गया हवाई पट्टी के रनवे की लंबाई 6800 फीट से अधिक है तथा और भी अधिक बढ़ाए जाने के लायक है। इसमें पर्याप्त जगह है, जिसे विकसित करके अंतर्राष्ट्रीय मानदंड के मुताबिक लाया जा सकता है।

महोदय, बौद्ध धर्म अनुयाइयों के लिए बोद्धगया का विश्व में उतना ही महत्व है, जितना कि ईसाइयों के लिए जेरूशलम और मुसलमानों के लिए मक्का का है। इसलिए इस हवाई अड्डे को अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का स्वरूप देकर इसे विदेशी पर्यटकों, विशेषकर बौद्ध धर्मावलंबियों का मुख्य आकर्षण का केन्द्र बनाया जा सकता है। ज्ञातव्य हो कि पहले से ही बौद्ध धर्म से संबंधित देश जापान, कोरिया, श्रीलंका इत्यादि गया में बौद्ध धर्म से संबंधित स्थलों की सुरक्षा एवं रख-रखाव हेतु काफी धन खर्च कर चुके हैं। अगर विदेशी सरकारें भारत में अपनी पूंजी लगा सकती है तो भारत सरकार का भी यह नैतिक दायित्व होता है कि पूरक भाव से गया को अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का स्वरूप प्रदान करे।

महोदय, गया हवाई अड्डा नेशनल एअर पोर्ट अथोरिटी के अधीन है। करीब दो महीने पहले श्री आर० ए० अवस्थी, उपनिदेशक, नेशनल एअर पोर्ट अथोरिटी द्वारा दिनांक 27 मई, 1994 को लिखे पत्र में श्री ए० के० सिन्हा, निदेशक सह विशेष सचिव, नागर विमानन विभाग, बिहार सरकार को बताया गया कि जांच के उपरांत हवाई अड्डे को एअर बस—320 विमान को उतारने लायक पाया गया है। यद्यपि इसमें कुछ अतिरिक्त कार्य कराए जाने की आवश्यकता है, जिसका आंकलन करीब 54 करोड़ 30 लाख रुपए अनुमानित है। परन्तु, खेद के साथ कहना पड़ता है कि इतने अधिक लोक महत्व के प्रोजेक्ट को भारत सरकार द्वारा आठवीं पंचवर्षीय योजना में सन्निहित नहीं किया गया है। यह बौद्ध धर्म और विदेशी पर्यटकों के हितों की सरासर अनदेखी है।

अन्त में, महोदय, मैं आपके माध्यम से इस अति लोक महत्व के मुद्दे पर भारत सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं तथा निवेदन करूंगा कि इसे प्राथमिकता के तौर पर लिया जाए। धन्यवाद।

Devastation due to heavy rainfalls in Himachal Pradesh

श्री महेश्वर सिंह (हिमाचल प्रदेश): उपाध्यक्ष महोदय, जहां इस वर्ष सारे देश में अधिक वर्षा के कारण बाढ़ ने विनाश लीला रची है, वहीं हिमाचल प्रदेश भी अछूता नहीं रहा है। उस छोटे से प्रदेश में अनेकों लोगों की जाने गयीं, परिवार के परिवार समाप्त